जाओ और शिष्य बनाओ

प्रगतिशील शिष्यता

भाग 1

द्वारा

डोटा

मैनुएल 3

समूह के अगुवों के लिए

तीसरा सस्करण

©2009 डोटा

परिचय

क्या आप यीशु मसीह के शिष्य के रूप में बढ़ना चाहते हैं?
क्या आप दूसरे विश्वासियों की बढ़ने में मदद करना चाहते हैं?

तब आप **शिष्य निर्माण करने के सम्बन्ध में अगुवों के चार मैनुएल** का अध्ययन, तथा प्राप्त शिक्षाओं का अभ्यास ज़रूर करें।

जिसे आगे को : मैनुएल 1-4 पुकारा जाएगा।

यीशु ने चेले बनाए। उसने लोगों से कहा, ''आओ और देखो' और ' मेरे पीछे हो लो' (यूहन्ना 1:39,43)। और हर जगह पर लोग यह ही देखने के लिए आते हैं कि उसने किस प्रकार को जीवन व्यतीत किया और किस कारण उसने अपने प्राणों की कुर्बानी दी। संसार भर के सभी राष्ट्रों में लोग उसकी विशेषताओं और उसके कामों के कारण ही उसका अनुसरण करते हैं। उसने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। उसने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है।

बाद में यीशु ने प्रार्थना के साथ बारह लोगों को चेला बनाने तथा उन्हें तैयार करने के लिए चुना। वह चाहता था कि वे प्रगतिशील अगुवे 'उसके साथ' समय बिताएं, उसकी बातों को सुनें तथा उसके जीवन को ध्यान से देखें, उसके जीवन तथा उसकी सेवकाई का अनुसरण करें(मरकुस 3:13-15)।

दो वर्षों के बाद यीशु ने अपने चेलों को लक्ष्य सौंपा ''जाओ और सारी जाति के लोगों को चेला बनाओ''(मत्ती 28:18-20)। और उन्होंने जाकर यरूशलेम से लेकर जगत के छोर तक के लोगों को अपना शिष्य बनाया। ये चेले उनकी बारी आने पर और भी अनछुए इलाकों तक गये और उन्होंने अन्य चेले बनाये। जो कुछ उन्होंने सीखा था वह दूसरों को भी सिखाया (2 तीमुथियुस 2:2)। अत: यीशु मसीह के चेले वर्तमान में भी सारे देशों में नये शिष्यों को बना रहे हैं।

प्रेरित पौलुस बताते हैं कि यीशु मसीह ने खास मसीहियों को एक काम दिया है।

> ''जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया
> जाए और मसीही की देह उन्नति पाए।'' (इफिसियों 4:11-16)

चार मैनुएल का उद्देश्य मसीही समूह के अगुवे की उसकी देख रेख में रहने वाले दूसरे मसीहियों की यीशु मसीह का चेला बनाने में सहायता करना है।'एक चेला या शिष्य' परिपक्व मसीही होता है।

यह पाठयक्रम समूह के अगुवे को निम्नलिखित बातों के देने के द्वारा शिष्यों के प्रशिक्षण को प्रयोगात्मक बनाता है:

1.प्रत्येक मैनुएल में बारह अध्याय होते हैं जिन्हें तीन माह के अन्तराल में समाप्त किया जा सकता है।
2. बाइबल के महत्वपूर्ण हवाले विद्यार्थियों की मसीह व बाइबल को जानने में सहायता करते हैं।
3. समूह के अगुवे दिये गये प्रश्नों का उपयोग करें तथा प्रतिभागियों से चर्चा करने से पहले बाइबल के अनुच्छेद को पढ़ने के लिए बोलें।
4. अध्ययन सामग्री में हर एक प्रश्न के लिए संक्षेप में उत्तर दिये गये हैं। यह अगवों के लिए मार्गदर्शिका के रूप में काम करती है।
5.प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के साथ मिलकर अनुशासन के व्यवहारिक तरीकों का अभ्यास करना सिखाता है।
6.हर एक अध्याय में घर पर तैयार करने के लिए कुछ गृहकार्य होता है, जिसे प्रतिभागियों को दिया जाता है।
7.प्रशिक्षण कार्यक्रम दूसरों तक आगे बढ़ाने के लिए सहज है। 12 अधयाय के इस कोर्स को समाप्त कर लेने के बाद, जो विद्यार्थी दूसरे लोगों के छोटे समूह में इस शिक्षा को बांटेगें, उन्हें अगुवों के लिए तैयार किये गये मैनुएल की एक प्रति दी जाएगी।

हमारी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में शिष्यों की संख्या को तेज़ी से बढ़ाए और बहुत से लोग यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले हो सकें (प्रेरितों 6:7)।

सारी बातों में परमेश्वर को महिमा मिले! 'क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन।''(रोमियों 11:36)

डोटा (शिष्यता प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रसारण। यह नाम उस समय की याद दिलाता है जब यह प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल रेडिया में ही प्रसारित किया जाता था)

1994 (प्रथम संस्करण)

2009 (तीसरा संशोधित संस्करण)

सर्वाधिकार

चारों मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण के लिए नि:शुल्क नकल किया जा सकता है, लेकिन उन्हें बिना लिखित अनुमति के बेचा या किसी दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश

इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने तथा लोगों को आशीषित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। लेकिन क्योंकि इन चारों मैनुएल का उद्देश्य मसीहियों को तैयार या प्रशिक्षित करना है, इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि शिष्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के अगवे जिनती ज़रूरत हो उतनी की प्रतियां बनाएं। जब कोई विद्यार्थी बारह अधयायों के कोर्स को समाप्त कर ले तब ही उसे मैनुएल की एक प्रति दी जाए और तब ही वह किसी दूसरे व्यक्ति या छोटे समूह को इस कार्यक्रम की शिक्षा दे सकता है।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए मैनुएल 2

प्रगतिशील शिक्षा -भाग 2

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

तीन माह के लिए साप्ताहिक कायक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह 3-10 लोगों तक का ही हो। पत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 25	आराधना (परमेश्वर असीमित है)
	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (उत्पत्ति 1:1-4:26)
	शिक्षा देना (शान्त समय व प्रश्नोत्तर तरीका)
अध्याय 26	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (उत्पत्ति 6:1-9:28)
	याद करना (पाप का स्वभाव: रोमियों 3:23)
	बाइबल अध्ययन (कलीसिया का सांस्कृतिक कर्तव्य। उत्पत्ति 1:24-2:25)।
अध्याय 27	अराधना (परमेश्वर को जाना जा सकता है)
	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समया बिताना (उत्पत्ति 12:1-15:21)
	शिक्षा(सुसमाचार,सुसमाचार का सारांश-भाग 2)
अध्याय 28	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (उत्पत्ति 16:1-19:29)
	याद करना (पाप का दण्ड: सभोपदेशक 12:14)
	बाइबल अध्ययन (कलीसिया का प्रचारकीय लक्ष्य। प्रेरितों 5:12-42)
अध्याय 29	आराधना (परमेश्वर रक्षक है)
	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना(उत्पत्ति20:1-23:20)
	शिक्षा देना (बाइबल, बाइबल का सही तरीके से वर्णन करना)
अध्याय 30	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (निर्गमन 4:1-7:13)
	याद करना (पाप का प्रायश्चित: रोमियों 5:8)
	बाइबल का अध्ययन (कलीसिया का मिश्नरी कर्तव्य। मत्ती 28:18:18-20)
अध्याय 31:	आराधना (परमेश्वर छुटकारा देने वाला है)
	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (निर्गमन 7514-10:29)
	शिक्षा (प्रार्थना। प्रार्थना करने के लिए बाइबल का इस्तेमाल करना)
अध्याय 33	अराधना (परमेश्वर एक कुम्हार है)
	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना(निर्गमन 16:1-19:25)
	शिक्षा(आज्ञाकारिता, व्यवहारिक इस्तेमाल)
अध्याय 34	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (गिनती 11:1-14:45)
	याद करना (विश्वास के द्वारा उद्धार: यूहन्ना 1:12)
	बाइबल अध्ययन(कलीसिया की शिक्षा। 1 पतरस 5:1-7)
अध्याय 35	आराधना(परमेश्वर की उपस्थिति की चाह करना)
	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (व्यवस्था विवरण 11:13-21; 13:1-5; 16:18-20; 17:14-20; 18:9-13; 18:14-22)
अध्याय 36	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना (व्यवस्थाविवरण 28:1-31-13)
	याद करना (सुसमाचार: श्रृंखला का अवलोकन करना)
	बाइबल का अध्ययन(मसीही जीवन और मसीह की देह का कार्य) (1कुरिन्थियों 12:4-7,12-28)
परिशिष्ट 12.	संगति। बाइबल में 'कलीसिया' शब्द का अर्थ।
परिशिष्ट 13.	संगति। मसीही कलीसिया में कार्य व उसका प्रारूप
परिशिष्ट 14.	संगति. कलीसिया अर्थात मसीह की देह अटूट है।
परिशिष्ट 15.	मसीह. यीशु मसीह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियां।
परिशिष्ट	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने, बाइबल अधययन करने, मनन व वचन याद करने का तरीका: समूह के अगुवों के लिए मॅनुएल 1 में परिशिष्टों को देखें

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधाना (सामुहिक)
09.30-11.00	शिक्षा (सामुहिक)
	अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अधययन (सामुहिक)
	अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अधययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए(सामुहिक)
	अन्तराल
17.30-17:45	मनन व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45-18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19:45	बांटना और प्रार्थना करना (10 लोगों से कम के समूह में)

दिन 1 (अध्याय 25+26)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर असीमित है)
शिक्षा (परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना,प्रश्नोत्तर तरीका
बाइबल अध्ययन(कलीसिया का सांस्कृतिक लक्ष्य। उत्पत्ति 1:24-2:3)
याद करना (पाप का स्वभाव : रोमियों 3:23)
बाइबल पठन (उत्पत्ति 1-4;6-9)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में:उत्पत्ति 4)

दिन 2 (अध्याय 27+28)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर को जाना जा सकता है)
शिक्षा (सुसमाचार, सुसमाचार का साराशं-भाग 2)
बाइबल अध्ययन(कलीसिया का प्रचारकीय लक्ष्य। प्रेरितों 5:12-42)
याद करना (पाप का दण्ड: सभोपदेशक 12:14)
बाइबल पठन (उत्पत्ति12-15; 16-19:29)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: उत्पत्ति 17)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर रक्षक है)
शिक्षा (बाइबल. बाइबल का उचित तरीके से वर्णन करना)
बाइबल अध्ययन(कलीसिया का मिश्नरी लक्ष्य)
याद करना (मत्ती 28:18-20)
बाइबल पठन (उत्पत्ति 20-23; निर्गमन 4-7:13)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में:उत्पत्ति 22:1-19)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 31+32)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर छुटकारा देने वाला है)
शिक्षा (प्रार्थना, बाइबल को इस्तेमाल करते हुए प्रार्थना)
बाइबल अध्ययन(कलीसिया के लक्ष्य : इफिसियों 4:1-16))
याद करना (उद्धार एक उपहार है: इफिसियों 2:8-9)
बाइबल पठन (निर्गमन 7:14-10:11-14)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: निर्गमन 12:1-42)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 33+34)
प्रार्थना
आराधना(परमेश्वर एक कुम्हार है)
शिक्षा (आज्ञाकारिता,व्यवहारिक इस्तेमाल)
बाइबल अध्ययन(कलीसिया की अगुवाई. 1 पतरस 5:1-7)
याद करना (विश्वास के द्वारा उद्धार: यूहन्ना 1:12))
बाइबल पठन (निर्गमन 16-19; गिनती 11-14)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में: निर्गमन 18:17-19:6)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6
(अध्याय 35+36)
प्रार्थना
आराधना (परमेश्वर की उपस्थिति की चाह करना)
शिक्षा (संगति। मसीही समाज या कलीसिया)
बाइबल अध्ययन (मसीही जीवन व मसीह की देह के कार्य। 1 कुरिन्थियों 12:4-7,12-28)
याद करना (श्रृंखला का अवलोकन करना : सुसमाचार)
बाइबल पठन (व्यवस्थाविवरण 11:13-21; 113:1-5; 16:18-20;17:14-20; 18:9-13; 18:14-22; 28-31:13)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समया(दो दो के जोड़े में:व्यवस्थाविवरण 18:9-22)
बांटना और प्रार्थना करना ।

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 12.	संगति। बाइबल में 'कलीसिया' शब्द का अर्थ।
परिशिष्ट 13.	संगति। मसीही कलीसिया में कार्य व उसका प्रारूप
परिशिष्ट 14.	संगति. कलीसिया अर्थात मसीह की देह अटूट है।
परिशिष्ट 15.	मसीह. यीशु मसीह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियां।